

## भारतीय धातु-शिल्प

भारतीय धातु-शिल्प का इतिहास शानदार रहा है। इस महीन कारीगरी ने हड़प्पा काल में ही ललित कला का दर्जा प्राप्त कर लिया था। भारतीय शिल्पी 3000 ईसा पूर्व में ही धातु-शिल्प कला में महारत हासिल कर चुके थे। सिन्धु घाटी सभ्यता के समय की मोहक नर्तकी आकृति इस बात का प्रमाण है कि उस प्रारंभिक दौर के शिल्पी अपनी कला में किस बुलंदी तक पहुँच चुके थे। धातुकर्म के क्षेत्र के हुनरमंद शिल्पियों की अन्य महान उपलब्धियों में चोल राजाओं के दौर की कांस्य प्रतिमाएँ और सम्राट अशोक के शासनकाल में निर्मित दिल्ली के महरौली स्थित लौह स्तंभ का नाम सर्वोपरि है।

भारत में धातुकर्म शिल्पियों ने विविध प्रकार की धातुओं जैसे लोहा, तांबा, चांदी और मिश्र धातुओं जैसे कांसा, बेल मेटल (घंटी धातु), व्हाइट मेटल (कृत्रिम चांदी) आदि का इस्तेमाल कर विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया है, जिनमें विविध पात्र, कड़ाही, बर्तन, फोटो फ्रेम, देव प्रतिमाएं, पौराणिक मूर्तियां और पशु आकृतियां आदि शामिल हैं। विभिन्न धातुओं का इस्तेमाल कर दरवाजे का हैंडल, नल, की-चेन, डिब्बों आदि का निर्माण भी किया जाता है। सामान्य रूप से मूर्तियों का निर्माण लॉस्ट वैक्स प्रक्रिया से किया जाता है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत सबसे पहले किसी मूर्ति अथवा वस्तु का मोम का मॉडल तैयार किया जाता है। इस प्रकार तैयार किए गए मॉडल पर चिकनी मिट्टी का लेप चढ़ाया जाता है और इस लेप पर अनेक छिद्र किए जाते हैं। अंत में मॉडल के शीर्ष पर किए गए छिद्र के जरिए इसमें पिघला धातु उड़ेली जाता है, जिससे यह मोम पिघल जाती है। इस प्रकार अन्दर बने खाली सांचे में मोम के स्थान पर स्वतः ही गर्म धातु भर जाती है। इस धातु को ठंडा होने के लिए छोड़ दिया जाता है और अंत में इस पर लगी चिकनी मिट्टी की परत को हटा कर इसे चमका दिया जाता है। इसी विधि से विभिन्न आकार के सांचों में पिघली धातु के इस्तेमाल से अन्य वस्तुएं भी बनाई जाती हैं। आकृतिबद्ध वस्तुओं के विभिन्न हिस्सों को सोल्डरिंग के माध्यम से जोड़ा जाता है। इस प्रकार निर्मित धातु वस्तुओं का सौंदर्य बढ़ाने के लिए मीनाकारी, नक्काशी और कोफ्तागरी (डैमसनिंग) प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है।

देश के विभिन्न हिस्सों में धातुकर्म की विविधता देखने को मिलती है। कश्मीर के शिल्पी, घरेलू इस्तेमाल की वस्तुओं जैसे कटोरियों, समोवार, प्लेट और ट्रे आदि के साथ-साथ लोहे और पीतल से बनी पारंपरिक वस्तुओं पर बारीक मीनाकारी के लिए जाने जाते हैं। यहां के शिल्पकार, तांबे और चांदी से बनी वस्तुओं पर अत्यंत सजावटी बूटेदार और कैलिग्राफी आधारित आकृतियां उकेरने के लिए भी प्रसिद्ध हैं। विभिन्न धातुओं से बनी इन वस्तुओं को फिर ऑक्सीडाइज़ किया जाता है, जिससे इनकी पृष्ठभूमि की तुलना में इनका डिजाइन अत्यंत निखार के साथ उभरता है। धातुकर्म की इस शैली को नक्काशी कहा जाता है।

उत्तर प्रदेश का मुरादाबाद दुनियाभर में अपनी पीतल की वस्तुओं के लिए जाना जाता है, जिनमें विविध प्रकार के पात्र, ट्रे, कटोरे और महीन नक्काशी से सजाए गए अत्यंत मोहक सजावटी सामान से लेकर इलेक्ट्रोप्लेटिड पीतल तथा कांसे की बनी चीजें और व्हाइट मेटल से गढ़ी विविध वस्तुएं शामिल हैं। उत्तर प्रदेश का ही बनारस, पीतल और तांबे से निर्मित देवी-देवताओं की मूर्तियों और घरेलू इस्तेमाल के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है।

गुजरात स्थित पलिताना में कांस्य प्रतिमाओं का व्यापक स्तर पर निर्माण होता है। राजस्थान में जयपुर, पीतल की नक्काशी और लाख के सजावटी काम का मुख्य केन्द्र है। यहां निर्मित वस्तुओं पर पारम्परिक डिजाइन और बूटेदार आकृतियां तथा आखेट चित्र आदि उकेरे जाते हैं। निर्मित वस्तुओं की पूरी सतह या उसके किसी हिस्से पर लाख से बने डिजाइन बनाए जाते हैं। जयपुर की बनी कांस्य प्रतिमाएं भी काफी प्रसिद्ध हैं। अलवर और जयपुर में कोफ्तागरी आधारित धातुकर्म का भी काफी चलन है। इस विशिष्ट शैली के अंतर्गत किसी एक धातु में दूसरी धातु को तार के रूप में जड़ कर डिजाइन तैयार किया जाता है।

बुंदेलखण्ड के सजावटी, धातु-निर्मित डिब्बे, सरगुजा के दीप, रायगढ़ की चावल मापक कटोरियां और पशु आकृतियां तथा बस्तर की प्रतिमाएं मध्य प्रदेश के शिल्पियों की सृजनात्मकता की अद्भुत मिसालें हैं। इसी प्रकार, आंध्र प्रदेश की धातु-शिल्प परम्परा भी समृद्ध है। पैंबराती में पत्र (प्लाक), कंटेनर, फूलदान आदि पर पीतल के जरिए शीट धातु का सजावटी कार्य किया जाता है। इसी प्रकार, श्रीकाकुलम के बुढीटी गांव से हमें पीतल तथा अन्य मिश्र धातुओं से बने अत्यंत मोहक बर्तन और अन्य वस्तुएं प्राप्त होती हैं। आंध्र प्रदेश, बीदरी शैली की धातु-निर्मित वस्तुओं के लिए भी

प्रसिद्ध है। सांचों में जस्ते और तांबे के मिश्रण को भर कर बीदरी शैली की वस्तुओं का निर्माण होता है। तैयार होने के बाद इन वस्तुओं पर सुन्दर डिजाइनों की मीनाकारी की जाती है और सजावटी लकीरनुमा खाँचे बनाए जाते हैं। इसके बाद, इन खाँचों को चाँदी से भरा जाता है और इनमें चमक पैदा की जाती है। इस प्रक्रिया के अंत में वस्तुओं को ऑक्सीडाइज़ किया जाता है, जिससे इनकी सतह काली हो जाती है और फलस्वरूप खाँचों में भरी चाँदी बेहद खूबसूरत अंदाज में चमक कर उभरती है। इस तकनीक के इस्तेमाल से पॉट, हुक्का, ट्रे, कटोरियाँ आदि बनाई जाती हैं।

डोकरा धातु-शिल्प, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र में लोकप्रिय है। धातु-शिल्प की इस शैली का सबसे अनूठा पहलू यह है कि इससे निर्मित दो वस्तुएं कभी भी एक समान नहीं होती। इस तकनीक का इस्तेमाल कर जनजातीय लोग घोड़ों, ढोलवादकों, अपने देवी-देवताओं की आकृतियां और प्लाक निर्मित करते हैं। ये वस्तुएं मुख्य तौर पर पीतल के व्यर्थ टुकड़ों का प्रयोग कर बनाई जाती हैं। धातु-शिल्प की सभी अन्य शैलियों से विपरीत डोकरा धातु-शिल्पी की वस्तुओं को चिकनी मिट्टी से भरा जाता है। आंध्र प्रदेश और उड़ीसा में प्रचलित चांदी की नक्काशी का काम चांदी की महीन तारों की मदद से तैयार अपने खूबसूरत और बारीक डिजाइनों के लिए मशहूर है। चांदी की पतली पट्टियों को आड़े-तिरछे डिजाइन में गुंथ कर वस्तुओं का आकार दिया जाता है। इन पतली पट्टियों को अत्यंत सफाई से आपस में जोड़ दिया जाता है और चांदी की अत्यंत महीन तारों को जोड़कर जाली या झालर का डिजाइन तैयार किया जाता है। इस शैली के सजावटी कार्य में मुख्य रूप से पशुओं और पक्षियों की आकृतियां बनाई जाती हैं। चांदी की इस नक्काशी के जरिए ट्रे, सिगरेट केस, की-चेन सहित साज-सजावट के बहुत से अन्य सामान भी तैयार किए जाते हैं। तमिलनाडु की पीतल-निर्मित वस्तुओं में धार्मिक कार्यों में प्रयोग में लाए जाने वाले पारम्परिक सजावटी दीप स्तंभ शामिल हैं। इसी प्रकार, केरल चमकदार कांसे के आइनों के लिए जाना जाता है।

छह डाक-टिकटों के मौजूदा सेट में छह अलग-अलग धातु-शिल्प शैलियों के नमूनों का अंकन किया गया है। इनमें लौह-निर्मित सुराही, कांसे से बनी नटराज की प्रतिमा, तांबे से निर्मित पानदान, पीतल का धूपदान, चांदी से बना लोटा और स्वर्ण-निर्मित गजलक्ष्मी दीप शामिल हैं।

नटराज की कांस्य प्रतिमा चोल काल के दौरान की लॉस्ट वैक्स तकनीक की कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना है। पीतल का धूपदान और स्वर्ण-निर्मित गजलक्ष्मी दीप भी इसी बेहतरीन शिल्प कला की मिसालें हैं। इन सभी वस्तुओं को पहले सांचे में ढाल कर तैयार किया गया और बाद में, अत्यंत बारीक और खूबसूरत नक्काशी के जरिए इनकी सुन्दरता को चार-चांद लगाया गया।

लौह निर्मित सुराही और चांदी से बना आफताबा (टोंटीदार लोटा) और हुक्के के तले को 'ढलाई' और 'ठोक-पीट' की तकनीक से तैयार किया गया है। ढलाई, नक्काशी अथवा उत्कीर्णन के बाद इन वस्तुओं की सोने, पीतल अथवा मीनाकारी के माध्यम से सजावट की जाती है। धातु-शिल्प की इन शैलियों को कोफ्तागरी, मीनाकारी, बीदरी, निल्लो आदि कहा जाता है।

बीदरी हुक्का की ढलाई जस्ता, तांबा, टिन और सीसा धातु के इस्तेमाल से की जाती है। अपेक्षित वस्तु की ढलाई हो जाने के बाद इस पर चांदी जड़ी जाती है। भारतीय धातु-शिल्प का यह अनूठा नमूना अत्यंत दुर्लभ है। इस पर जायसी की 16वीं सदी की रचना पद्यावत का अंकन है।

मिनिएचर शीट पर अंकित स्वर्ण-मंजूषा भारतीय धातु-शिल्प का उत्तम उदाहरण है। धातु-शिल्प की इस शैली में सोने की शीट को अपेक्षित डिजाइन के अनुसार काटा जाता है और उसे उसी आकार के शीशे के टुकड़े पर रखकर चांदी के फ्रेम में सजा दिया जाता है।

बेहद बारीकी और खूबसूरती से तराशी, ढाली और सजाई गई धातु की ये सभी नायाब वस्तुएं भारत के गुमनाम शिल्पियों के कलात्मक और रचनात्मक कौशल की कहानी कहती हैं।

डाक विभाग, भारतीय धातु-शिल्प पर छह (6) डाक-टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

**आभार:-**

मूलपाठ	:	राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली से प्राप्त तथा इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट / मिनिएचर शीट / प्रथम दिवस आवरण / शीटलेट	:	श्री ब्रह्म प्रकाश
विरूपण	:	श्रीमति नीनू गुप्ता



तकनीकी आंकड़े  
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500पैसा(2), 1500पैसा(2), 2500पैसा(2)
Denomination	: 500 p(2), 1500 p(2), 2500 p(2)
मुद्रित डाक टिकटें	: 2.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	: 0.2 million each
मुद्रित मिनिएचर शीट	: 1.0 लाख
Miniature Sheet printed	: 0.1 million
मुद्रित शीटलेट	: 25,250
Sheetlets printed	: 25,250
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The above philatelic items are available for sale at [http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY\\_3D.html](http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html)

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00



## INDIAN METAL CRAFTS

The metal craft of India, which attained the standard of a fine art as early as from Harappan period, has a glorious past. Indian artisans knew the art of metal working since 3000 B.C. The beautiful figurine of the dancing girl belonging to the Indus valley civilization indicates the high level of workmanship attained by earlier craftsmen. The other high points reached by the craftsmen in the field of metalworking are bronze sculptures belonging to the Chola rulers and the iron pillar at Mehrauli, in Delhi, which was made during the time of King Ashoka.

In India craftsmen have used different metals like iron, copper, silver, and alloys like bronze, bell metal, white metal etc to make a variety of items such as pots, pans, utensils, photo frames, sculptures of deities, mythological figures and animals etc. Items like doorknobs, taps, key chains, boxes etc are also made, using different metals. Sculptures are generally made with the lost wax process. This process begins with creation of a wax model of the sculpture or any item. This model is then covered with clay and holes are made into the clay. Finally, molten metal is poured through the hole at the top, which causes the wax to melt. The cavity created within is automatically replaced by the hot metal. The metal is then allowed to cool and the final product is freed from clay, and polished. Pouring molten metal in moulds of desired shapes also creates metal items. Parts of molded metal are joined together with soldering. Various processes like enameling, etching and damascening are followed to beautify metal objects.

There is a variety of metal work which can be seen in different parts of the country. While craftsmen of Kashmir are known for richly engraved traditional household items like bowls, samovars, plates and trays, besides traditional vessels made out of iron and brass, they are also famous for intricate floral and calligraphic patterns embossed on copper and silver items. These items are then oxidized, which makes the design to stand out from the background. This work is known as 'naquashi'.

Moradabad in Uttar Pradesh is famous all over the world for its range of brass items which ranges from items like pots, trays, bowls and decorative pieces, decorated with intricate etching to electroplated brass and copper items and items made of white metal. Varanasi, also in Uttar Pradesh, is known for cast sculptures of deities and household utensils made of brass and copper.

Making of bronze sculptures is common in Palitana in Gujarat. In Rajasthan, Jaipur is the main center for brass engraving and lacquering. Ethnic designs and floral patterns, hunting scenes etc are hammered or embossed on the surface. Lacquered designs either cover the entire body or a part of the item. Jaipur is also known for its bronze sculptures. The art of Koftagari or damascening work, where one metal is encrusted into another in the form of wire, is mainly practiced in Alwar and Jaipur.

Ornate metal boxes of Bundelkhand, lamps of Sarguja, rice measure bowls and animal figurines of Raigarh, sculptures of Bastar are a few examples of the creativity of crafts persons of Madhya Pradesh. Andhra Pradesh has a rich tradition of metal craft. Sheet metal work using brass is done in Pembarti, on plaques, containers, vases etc. From the village of Budhiti in Srikakulam, come elegant utensils and items made of brass and other alloys. Andhra Pradesh is also famous for its Bidri ware. Pouring molten zinc and copper solution into moulds creates Bidri items.

The surface of the object is then engraved in interesting designs to create grooves. These grooves are then inlaid with silver and then polished. Finally the objects are oxidized, which makes the surface black and the silver inlay, thus stands out, creating a stunning contrast. Pots, hookahs, trays, bowls etc are created using this technique.

The Dokra metal craft is popular in the tribal belts of Andhra, Orissa and Madhya Pradesh. The uniqueness of this craft form is that no two pieces are alike. Small figurines of horses, drummers, tribal deities and plaques are made here. These items are mainly made from brass scrap. Unlike any other metal craft the core of the objects is filled with clay. Silver filigree work from Andhra and Orissa is famous for its intricate designs made out thin silver wires. Objects are created with strips of silver, looped and in zigzag patterns. These strips are deftly soldered together. The delicate jali or trellis like design is achieved by using thin twisted silver wires. Animals and birds dominate creative filigree work, which is also carried out to create trays, cigarette cases, key chains and other decorative pieces. Brassware from Tamil Nadu comprises of decorated traditional lamps, used in religious functions, while Kerala is famous for its polished bronze mirrors.

This set of six stamps portrays images of six different metal crafts, namely, Surahi which is made in Iron, Nataraja, made in Bronze, a Pandan made in Copper, an Incense burner made in Brass, Spouted Lota made in Silver and Gajalakshmi Lamp which is made in Gold.

The bronze image of Nataraja is an excellent example of Chola period workmanship done with lost wax technique. The brass incense burner and the gold Gaja Lakshmi, are also examples of the same workmanship. These were cast first and later on, intricate carving and engraving work has been done to enhance the beauty of objects.

The iron *Surahi*, (water vessel) and silver Spouted Lota are made using both "casting" and "beating" technique. Once the casting, engraving or chasing is done then filling of gold, brass or enamel takes place to ornate the object. These are known as damascening, enamelling, birdi, nillo etc.

The Bidri huqqa base has been casted by using zinc, copper, tin, lead and zinc metals later on once the casting of object is done then silver inlay is done. This piece is unique and very rare example, where story of Padmavat, 16th century text written by Jayasi, has been written on the object.

The gold Gajalakshmi Lamp, on the miniature sheet is a fine example of Indian Metal Craft. A thin gold sheet is cut as per design and then placed over the same size of piece of glass and silver framing is done.

All these intricately carved, cast and ornate metal artifacts reflect the artistic and creative skill of unknown artisans of India.

The Department of Posts is pleased to release a set of six stamps on Indian Metal Crafts.

### Credits:-

Text	:	Based on the material received from National Museum, Delhi and information available on internet
Stamp / Miniature Sheet / Sheetlet / FDC	:	Sh. Brahm Prakash
Cancellation Cachet	:	Ms. Nenu Gupta

भारतीय डाक विभाग  
Department of Posts  
India



भारतीय धातु शिल्प  
*Indian Metal Crafts*

विवरणिका BROCHURE